स्वतन्त्रता पूर्व युग की पत्रकारिता में हरियाणा के पत्रकारों का योगदान

डॉ0 आर0 के0 मेहरा
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
अम्बाला छावनी (हरियाणा)

इतिहास साक्षी है कि 1857 की क्रान्ति में हरियाणावासियों का योगदान उल्लेखनीय रहा है। 10 मई, 1857 को प्रातःकाल हरियाणा के अम्बाला से ही अंग्रेजों के खिलाफ सबसे पहले स्वतन्त्रता संग्राम का बिगुल बजा था। 1857 की क्रान्ति को दबाने के बाद अंग्रेजों ने क्रोधित होकर हरियाणा के भू–भाग को पंजाब व उत्तर–प्रदेश के भू–भाग में मिला दिया था। भले ही आधुनिक भारत के मानचित्र पर हरियाणा का पुनः उदय पहली नवम्बर, 1966 को हुआ लेकिन हरियाणा के भूमि–पुत्रों–सर्वश्री बाबू बालमुकुन्द गुप्त, पं0 माधवप्रसाद मिश्र एवं पं0 राधाकृष्ण मिश्र आदि पत्रकारों ने स्वतन्त्रता पूर्व युग की पत्रकारिता को राष्ट्रीय दृष्टि से समृद्ध किया है।

प्रखर राष्ट्रवादी पत्रकार बाबू बालमुकुन्द गुप्त का जन्म हरियाणा के रोहतक जिले के ग्राम गुड़यानी में 23 अक्तुबर, 1865 को हुआ, जो अब रिवाड़ी जिले में है। झज्जर निवासी पंडित दीनदयाल शर्मा की प्रेरणा से गुप्त जी ने 'मथुरा अखबार' में लिखना आरम्भ किया। सन् 1886 में पंडित दीनदयाल शर्मा के अनुग्रह पर ही 'अखबारे चुनार' का सम्पादन हाथ में लिया और जीवनभर पत्रकार रहे। 'अखबारे चुनार' (1886–87) और 'कोहेनूर'(1887–88) में प्रकाशित अपनी रचनाओं का संग्रह स्वयं गुप्त जी नहीं कर पाए। वे लखनऊ से प्रकाशित 'अवधपंच'के भी नियमित लेखक थे। इसमें उन्होंने 'मिस्टर हिन्दी' से लिखा था। लखनऊ से प्रकाशित 'गुलदस्ता','उर्दू ए मोअल्ला' और 'मुल्लांमसीह' में भी उनकी रचनाएं छपा करती थी। 'मरवजन', 'हिन्दुस्तानी' और 'विक्टोरिया' पेपर में भी आप लिखा करते थे। कानपुर से प्रकाशित उर्दू के एक श्रेष्ठ पत्र 'जमाना' में गुप्त जी की 'उर्दू अखबार' लेखमाला तथा देशभक्तिपूर्ण लेखमाला 'शिवशम्भु के चिट्ठे' प्रकाशित हुए थे। उर्दू में वे 'शाद' नाम से लिखते थे।

हिन्दी पत्रकारिता क्षेत्र में गुप्त जी का प्रवेश कालाकांकर से प्रकाशित 'हिन्दोस्थान' (1889–91)समाचार –पत्र से हुआ था। गुप्त जी ने 'मैं सुकवि हूँ' नाम से 'हिन्दोस्थान' में विधवा–विवाह के समर्थन और पं0 अम्बिकाप्रसाद के रूढ़िवादी विचारों के विरोध में कई लेख लिखे। इससे 'हिन्दोस्थान' समाचार –पत्र और गुप्त जी की ख्याति का प्रसार हुआ, किन्तु राष्ट्रवादी विचारों के कारण उनको सम्पादकीय विभाग से अलग कर दिया गया। हिन्दी पत्रकारिता क्षेत्र के इतिहास में वह पहले सम्पादक थे, जिसको अपनी देशभक्ति के कारण पत्र के सम्पादन से अलग होना पड़ा था। लेकिन इसी अवसर ने उनको तत्कालीन पत्रकारिता के गढ़ कलकत्ता तक पहुँचाने में एक सोपान का कार्य किया और 1893 में सहसम्पादक के रूप में 'हिन्दी–बंगवासी' में चले गए।

'हिन्दी–बंगवासी'(1893–1897) में रहने के बाद धर्म–भवन के प्रश्न पर वहाँ से दिल्ली आ गए। 16 जनवरी, 1899 ई. का 'भारतमित्र' का अंक गुप्त जी के सम्पादन तथा प्रबन्धन में प्रकाशित हुआ और इसी अंक में उनका ' दिल्ली से कलकत्ता' यात्रा का वर्णन भी छपा था, जो उनकी उग्र राजनीति चेतना की साक्षी ही प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि गोरे लोगों द्वारा भारतीयों के प्रति घृणा को भी ज्ञापित करता है। इस लेख से 'भारतमित्र' पत्र और गुप्त जी का कलकत्ता के राष्ट्रवादी समाज में मान बढ़ गया।

'बंगवासी' के 'धर्मभवन' विषयक संकुचित विचारों का विरोध करने के लिए गुप्त जी ने नौ लेख लिखे। इन लेखो से गुप्त जी की व्यंग्य शैली की धाक जम गई और 'बंगवासी' का षड्यंत्र समाप्त हो गया, 'भारतमित्र' और अधिक लोकप्रिय बन गया। 'भारतमित्र' की लोकप्रियता के चर्चे पूरे भारतवर्ष में हो रहे थे,जिससे प्रभावित होकर हैदराबाद के नवाब के दीवान चाहते थे कि गुप्त जी उनके यहाँ आ जाए, लेकिन गुप्त जी को चाटुकारितापूर्ण, सामंती प्रथा में बिल्कुल भी रुचि नहीं थी। गुप्त जी ने लिखा था,' जो दो रुपए देकर मेरे अखबार को पढ़ता है, मेरे लिए वह किसी नवाब से कम नहीं, वह मुझे जानना चाहते है तो दो रुपए देकर 'भारतमित्र' पढ़ा करें।'

गुप्त जी के व्यक्तित्व का निर्माण हरियाणा की सांस्कृतिक विरासत तथा राष्ट्रवादी चेतना से हुआ था। वह उर्दू–लेखन और पत्रकारिता के माध्यम से हिन्दी–पत्रकारिता में प्रविष्ट हुए थे, लेकिन अपनी क्षमता, कौशल तथा सतत परिश्रम के बल पर हिन्दी–पत्रकारिता के शीर्षस्थ स्थान पर आसीन हो गए थे।

हरियाणा के भिवानी जिले के गॉव कूंगड़ में 1871 में जन्मे माधवप्रसाद मिश्र किसी भी दृष्टि से अपने युग के अपवाद न थे। वे आजीवन दो संस्थाओं से जुड़े रहे–'सुदर्शन' पत्र तथा 'श्रीभारत धर्ममण्डल' और इन दोनों संस्थाओं ने उनके व्यक्तित्व के दो पहलुओं को उजागर किया – पत्रकार एवं धर्मप्रचारक।'सुदर्शन' की नीतियों को लेकर उनके मन में कहीं कोई दुविधा नहीं नहीं थी। वह 'सरस्वती' के प्रतिद्वन्द्वी के रूप में ही शुरू नहीं हुआ था, वरन् उसका गुरुतर लक्ष्य धर्म का प्रचार करना

भी था, जिसकी सूचना प्रवेशांक में ही मिलती है कि 'सुदर्शन' हिन्दू पत्र है और यह सनातन धर्म को अपना प्राण समझता है। अधिकतर विद्वानों ने 'सुदर्शन' को 'सरस्वती' की टक्कर का माना है। मिश्र जी 'सुदर्शन' के अतिरिक्त 'वैश्योपकारक' के सम्पादक भी बने।'वैश्योपकारक' से उन्होंने हिन्दी–पत्रकारिता को नया आयाम दिया।

पं0 माधवप्रसाद मिश्र जी के अनुज पं0 राधाकृष्ण मिश्र ने भी 'भारतमित्र' और 'वैश्योपकारक' के सम्पादक के रूप में हिन्दी–पत्रकारिता की सराहनीय सेवा की । इन महान् पत्रकारों के अतिरिक्त हरियाणा की पावन भूमि से भी समाचार –पत्र /पत्रिकाएं प्रकाशित कर हरियाणा के भूमि–पुत्रों ने स्वतन्त्रता पूर्व युग की पत्रकारिता में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

हरियाणा की पावन भूमि से पत्रकारिता का श्रीगणेश कब हुआ प्रामाणिक रूप से कहा नहीं जा सकता। हिन्दी–पत्रकारिता विविध आयाम'भाग–1 में प्रकाशित डॉ. जयभगवान गोयल के लेख 'हरियाणा की हिन्दी पत्रकारिता' के अनुसार– 'जैन प्रकाश' हरियाणा से प्रकाशित होने वाला पहला पत्र है। इस पत्र के सम्पादक श्री जियालाल थे। इसका प्रकाशन 14 नवम्बर,1884 को फरुखनगर(गुड़गांव) से उर्दू और हिन्दी में आरम्भ हुआ था। श्री जियालाल के ही सम्पादन में 1884 में 'जैन साप्ताहिक' तथा 1887 में 'जियालाल प्रकाश' प्रकाशित हुआ जो 1890–91 में दिल्ली से प्रकाशित होने लगा था। फरुखनगर(गुड़गांव) से ही 1888 में जैनियों का एक मासिक–पत्र 'जैन प्रकाश हिन्दुस्तान' निकला, जो बाद में साप्ताहिक हो गया। चन्द्रकान्ता सूद ने 'पंजाब में हिन्दी पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास' में अस्पष्ट तौर पर ही सही हरियाणा की भूमि पर प्रकाशित होने वाला पहला पत्र 'जैन प्रकाश' ही माना है। लेकिन डॉ. केशवानन्द ममगाई ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी–पत्रकारिता के विकास में हरियाणा की देन' में 'जियालाल प्रकाश' पत्र का प्रकाशन 'जैन प्रकाश' से पहले माना है।

इन विद्वानों के विचारों से एक बात तो स्पष्ट रूप से ऊभरकर सामने आयी है कि हरियाणा की भूमि से पहला पत्र निकालने का श्रेय फरुखनगर (गुड़गांव) निवासी श्री जियालाल जी को ही जाता है। उन्होंने सन् 1884 से 1891 तक तीन पत्र निकाले, जो काशी से लीथो प्रैस पर छपते थे। श्री जियालाल के बाद बाबू कन्हैया लाल सिंह को 1889 में गुड़गांव गांव से 'जाट समाचार' निकालने का श्रेय जाता है। यह मासिक पत्र विद्याविलास प्रैस, आगरा से छपता था।

सन् 1900 के आस–पास आर्यसमाज तथा सनातन धर्म का प्रचार भी हरियाणा के क्षेत्र में जोर पकड़ने लगा था और उधर राष्ट्रीय नव–जागरण की भावना भी विकसित होने लगी थी, जिसके फलस्वरूप अनेक प्रबुद्ध पत्रों का प्रकाशन आरम्भ होने लगा। हिसार से 21 मार्च, 1907 में 'ज्ञानोदय' का प्रकाशन हुआ,जिसके सम्पादक अग्रोहा निवासी गुरु ब्रह्मानन्द जी महाराज थे।इसके प्रथम दो अंक साप्ताहिक थे जो हिसार से ही निकले और बाद यह पत्र कलकत्ता से मासिक रूप में छपने लगा। पं0 झाबरमल्ल शर्मा ने इसके सम्पादन को सम्भाला। अम्बाला छावनी से 1918 में 'आर्य' पत्र का प्रकाशन हुआ, जिसके सं. भीमसेन विद्यालंकार थे।

रोहतक जिले के गढ़ी सापला गांव में जन्में सर छोटू राम भी मूलतः पत्रकार ही थे। सत्ता जीवन शुरू करने से पहले तत्कालीन उत्तर प्रदेश के राजा रामपाल के यहॉ नौकरी के दौरान सर छोटू राम अंग्रेजी 'हिन्दुस्तान' तथा बाद में 'हिन्दुस्तान' हिन्दी के सम्पादक बने। यहॉ से नौकरी छोड़ने के उपरान्त सर छोटू राम जब 1909 से 1911 तक आगरा में वकालत की पढ़ाई कर रहे थे, तो दैनिक 'सैनिक' के सम्पादकीय विभाग में भी काम किया करते थे। बाद में सर छोटू राम ने 'दी टाईम्स ऑफ इंडिया', 'दी हिन्दुस्तान टाईम्स', 'पायनियर', 'दी स्टेटसमैन', 'दी फ्री प्रैस जर्नल' में नियमित रूप से कॉलम लिखे। लेकिन हरियाणा की पत्रकारिता में 1920 में भारतवर्ष में पहली बार हुए चुनावों में झज्जर क्षेत्र से चुनाव हारने के उपरांत रोहतक से 'जाट गजट' साप्ताहिक अखबार निकालने के साथ प्रवेश हुआ।

1922–23 में देश में स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलन जोर–शोर से आरम्भ हो गया था। देश में गांधी जी की आंधी चलने लगी जो हरियाणा में भी प्रविष्ट हुई और यहॉ के जन–आन्दोलन का नेत्तृत्व भिवानी के विख्यात पं0 नेकीराम शर्मा ने किया। स्वतन्त्रता –आन्दोलन को गति देने के लिए पं0 नेकीराम शर्मा ने 'संदेश' नामक साप्ताहिक पत्र निकाला जो कभी दिल्ली से और कभी भिवानी से छपता था। अंग्रेजी सरकार की दमनकारी नीतियों के कारण भी धड़ल्ले से इस पत्र में राष्ट्रीय आन्दोलन के पक्ष में और ब्रिटिश सत्ता के विपक्ष में समाचार छपते थे। अतः इस पत्र के लिए आधिकारिक रूप से कहा जा सकता है कि 'संदेश' हरियाणा में स्वतन्त्रता –आन्दोलन का वाहक पत्र था। इस पत्र के सम्पादक श्री निरंजनप्रसाद 'अजीत' थे। दो वर्ष तक चलने के बाद यह पत्र बन्द हो गया। इसके बाद 1925 में 'सावधान' पत्र निकला, जिसके सम्पादक श्री मदन शर्मा थे। सर छोटू राम के कट्टर आलोचक पं0 नेकीराम शर्मा मूलतः पत्रकार ही थे। राजनीतिक जीवन में आने के बाद उन्होंने 'हरियाणा तिलक' अखबार निकाला, जो हरियाणा में स्वतन्त्रता–आन्दोलन की आवाज बन गया था।

स्वतन्त्रता पूर्व हरियाणा के ऐसे भी पत्रकारों थे जिन्होंने धार्मिक, सामाजिक एवं जातीय प्रवृति से समय–समय पर समाचार–पत्र निकाल कर हरियाणा की पत्रकारिता में अपना स्थान बनाया। यथा–

1. **जगाधरी से**
   –1925 में उमादत्त शर्मा के सम्पादकीयत्व में 'ब्राह्मण समाचार' पत्र निकला।
2. **गुड़गांव से**
   – 1925 में 'ज्योतिष मार्तण्ड' मासिक पत्र निकला।
3. **करनाल से**
   –1925 में रामदत्त शर्मा ब्यास के सम्पादकीयत्व में 'औचित्य ब्राह्मण' पत्र निकला।
4. **अम्बाला से**
   –1926 में पं0 जगन्नाथ कौशल के सम्पादकीयत्व में 'ब्राह्मण' मासिक पत्र निकला।
   –1930 में श्री कीर्तिप्रसाद जैन के मानद सम्पादकीयत्व में 'आत्मानन्द' मासिक पत्र निकला। जैन ट्रस्ट सोसायटी द्वारा इसका संचालन होता था। यह पत्र महीने की पहली तारिख को छपता था। इसकी एक विशेषता यह थी कि यह अपने लेखकों को पारिश्रमिक देता था।
   –1943 में 'विश्वव्यापी सनातन धर्म' मासिक पत्र निकला।
5. **रेवाड़ी से**
   –1926 में सूरजदेवी प्रभाकर,गोदावरी देवी विदुषी के सम्पादकीयत्व में 'भक्ति' मासिक पत्रिका निकली।
   –1928 में पं0 प्रह्लाद शर्मा के सम्पादकीयत्व में 'ज्योतिष समाचार ' मासिक पत्र निकला।
   –1929 में राव गणेशीलाल के सम्पादकीयत्व में 'अहीर हितैषी' पत्र निकला। 1929 में ही 'अहीर हितैषी' का श्री शोभाराम यादव ने 'यादव हितैषी' में विलय कर पत्र निकला।
6. **भिवानी से**
   –1928 में नानूराम वर्मा के सम्पादकीयत्व में 'मैड़ प्रभाकर' मासिक पत्र निकला।
7. **सातरोड़ (हिसार) से**
   –1936 में लाला हरदेव सहाय के सम्पादकीयत्व में 'ग्राम सेवक' साप्ताहिक पत्र निकला।
   –1941 में लाला हरदेव सहाय के सम्पादकीयत्व में ही 'सेवक' साप्ताहिक पत्र निकला।
   दोंनो पत्र राष्ट्रवादी विचार प्रधान पत्र थे।
8. **कुरुक्षेत्र से**
   –1943 में 'धर्मक्षेत्र' पत्र निकला।
9. **सफीदो (जीन्द) से**
   –1943 में 'कायाकल्प' मासिक पत्र निकला।

उपरोक्त पत्र विषय की दृष्टि से अधिकतर धार्मिक हैं।'जैन प्रकाश','जैन साप्ताहिक', जैन प्रकाश हिन्दुस्तान','आत्मानन्द' जैन धर्म से, 'आर्य' आर्य समाज से तथा 'संदेश', 'धर्मक्षेत्र', 'विश्वव्यापी सनातन धर्म','भक्ति' आदि सनातन धर्म से सम्बन्धित पत्र हैं।'ग्राम सेवक', 'सेवक', 'सावधान' तथा 'ज्ञानोदय' को सामाजिक पत्रों की श्रेणी में रख सकते हैं। 'जाट समाचार','ब्राह्मण', 'ब्राह्मण समाचार','औचित्य ब्राह्मण,' 'अहीर हितैषी','यादव हितैषी' आदि पत्र जातीय पत्र थे और 'ज्योतिष मार्तण्ड', 'ज्योतिष समाचार' ज्योतिष से सम्बन्धित थे।

इस विवेचन से स्पष्ट है कि हरियाणा के पत्रकार सर्वश्री बाबू बालमुकुन्द गुप्त, पं0 माधवप्रसाद मिश्र एवं पं0 राधाकृष्ण मिश्र आदि पत्रकारों को छोड़ अधिकतर राष्ट्रीय चेतना से पूरी तरह जुड़ नहीं पाए थे तथापि 'ज्ञानोदय', 'संदेश' और 'सेवक' ज्ञानवर्धक पत्र थे जिनमें कुछ समाचारों के अतिरिक्त राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक विषयों पर विद्वतापूर्ण लेख होते थे। इसके सथ–साथ इन पत्रों में देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, अनुशासनहीनता एवं अव्यवस्ता आदि पर चर्चा होती थी। कुछ विज्ञापन और पारिवारिक रुचि की सामग्री भी होती थी। अतः राष्ट्रीय स्तर पर इन पत्रों ने गुरु ब्रह्मानन्द जी महाराज, पं0 झाबरमल्ल शर्मा, पं0 नेकीराम शर्मा और लाला हरदेव सहाय को स्वतन्त्रता पूर्व युग की पत्रकारिता में अपने महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए की पहचान दी। ऐसा नहीं है कि स्वतन्त्रता पूर्व युग की पत्रकारिता में हरियाणा के अन्य पत्रकारों का कोई योगदान नहीं, उनका भी धार्मिक दृष्टि से, ज्योतिषी दृष्टि से और जातीय दृष्टि से अपनी जातियों को प्रगति की राह पर अग्रसर करने में अहं योगदान रहा है।

संदर्भ सूची:

1. हिन्दी–पत्रकारिता विविध आयाम भाग–1
2. डॉ0 केशवनन्द ममगाई, हिन्दी–पत्रकारिता के विकास में हरियाणा की देन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़।
3. सम्पा0 डॉ0 के0सी0 यादव, जर्नल ऑफ हरियाणा स्टडीज, कु0 वि0, कुरुक्षेत्र।
4. डॉ0 लालचन्द गुप्त 'मंगल', हरियाणा के प्रमुख हिन्दी साहित्यकार, आई0बी0ए0पब्लिकेशन,अम्बाला।